हकीकते दीन

किस्त –2

मुफ़क्किरे इस्लाम डॉ0 मौलाना सै0 कल्बे सादिक़ साहब क़िब्ला

"अल्लाह जानवरों तक की खिदमात को याद रखता है"

इन्सानों की बात तो जाने दीजिए, अल्लाह तो इतना कद्र शनास है कि अगर उसकी राह में, जेहाद में कुछ जानवर खिदमत अन्जाम दे देते हैं तो अल्लाह उन जानवरों को भी इज्जत और एहतराम के साथ ज़िक्र करता है। वो जानवर इस लायक हो जाते हैं कि अल्लाह तआला उनकी क़सम खाये।

कुरआने मजीद के सूर–ए– 'आदयात' में किसकी कसम खाइ जा रही है? ना तो नबियों की कसम खायी जा रही है, न ही मुरसलीन की, न औलिया की और न मुजाहिदों की क़सम खाई जा रही है।

उन घोड़ों की कसम खाई जा रही है जिन पर सवार होकर मुजाहिदीन मैदाने जंग में गये थे। अरे कुरआन को पहचानिए तो पूरा इस्लाम समझ में आ जायेगा। अल्लाह घोड़ों की क़सम खा रहा है।

इसका मतलब यह है कि अगर अल्लाह की राह में घोड़े भी खिदमत अंजाम दें, तो वह घोड़े हमारे इमाम बारगाहों में ही नहीं लाये जाते वो कुरआन में भी ले आये जाते हैं। उनका ज़िक्र कुरआन में भी होता है। जब अबरहा ने लश्कर (Army) लेकर काबे को गिराने के लिए हमला किया था तो अल्लाह ने छोटे– छोटे परिन्दों (Birds) को भेजा। लोगों ने तर्जुमे (Translation) में ग़लती की है और 'अबाबील' का तर्जुमा 'अबाबील' ही कर दिया है। जबकि अरब के अबाबीलों से हमारे यहाँ के अबाबीलों में फ़र्क़ होता है। ये वो नहीं हैं जो आपके यहाँ उड़ा करते हैं। अबाबील अरबी जुबान में उन परिन्दों (Birds)को कहते हैं जो झुण्ड़ (Group)में चलते हैं। उन अबाबीलों ने कंकरियाँ (Pieces of stones)मारीं और अबरहा का लश्कर ख़त्म हो गया। कुरआने मजीद ने इन अबाबीलों का भी जिक्र किया ।

पूरा सूरा (सूर–ए– फ़ील) मौजूद है, जिसमें इस वाक़ये का ज़िक्र किया गया है। अबाबील जैसा भी जानवर हो पाक है लेकिन सबके नज़दीक 'कुत्ता' तो नजिस (Impure)है। उसके नजिस होने में कोई शक नहीं है। लेकिन एक नजिस जानवर कुत्ता भी औलियाए खुदा की हिफ़ाज़त करता है तो कुरआन उसकी भी कद्र करता है।

उसका ज़िक्र भी कद्र शनासी के साथ कुरआने मजीद के अन्दर मौजूद है और रिवायतों में है कि ये कुत्ता भी जन्नत में जायेगा। असहाबे कहेफ़ के साथ ये कुत्ता भी जन्नत में जायेगा। मैं समझता हूँ कि ये अकेला कुत्ता है जो जन्नत में जायेगा।

इससे अल्लाह का मिज़ाज सममझये! अल्लाह की राह में अगर एक जानवर भी कुछ करता है तो वो उसको भूलता नहीं, ज़िन्दा रखता है। तो हम हुसैन (अ०) को कैसे भूल जायें और कैसे उनका ज़िक्र न करें? लेकिन कितनी बदक़िस्मती की बात है कि हज़रत इब्राहीम (अ०) का ज़िक्र हो पुलिस लगने की ज़रूरत नहीं है। हज़रत नूह (अ०) का ज़िक्र हो तो किसी पहरे की ज़रूरत

नहीं। हज़रत मूसा (अ०) का ज़िक्र हो तो किसी फ़ौज की ज़रूरत नहीं। वो हस्तियाँ (Personalities) जो रसूल (स०) की रिसालत की तमहीद थी, उनका ज़िक्र हो तो किसी फौज और पुलिस की ज़रूरत नहीं लेकिन जो 'बिना–ए– ला इलाहा इल्लललाह हो हम थोड़ी यह कह रहे हैं ख़्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती ने फ़रमाया है कि हक़्क़ा कि बिनाए ला इलाह अस्त हुसैन'। उस हुसैन (अ०) का ज़िक्र हो पहरे में। ऐसा नहीं होना चाहिए।

इस ज़िक्र को इख़्तिलाफी (Controversial) ना बनाइए। हुसैन (अ०) से कौन इख़्तेलाफ कर सकता है? क्या यह ज़ात इख़्तिलाफी ज़ात है और किसने हुसैन से इख्तिलाफ किया है? आप शुरू से लेकर आज तक मुझे बताइए कि किसने हुसैन (अ०) से इख़्तिलाफ़ किया है? किसने आप की इज़्जत और एहतराम नहीं किया है। बड़े–बड़े सहाबए केराम जिस हुसैन (अ०) का ऐहतराम करें, उसके ज़िक्र को इख़्तेलाफ़ी हरगिज़ न बनाइए।

''काएनात (Universe) कितनी फैली हुई है?''

इन्सान को न तो यह ख़बर है कि ये कायनात (Universe)कितनी फैली हुई है। और ना ये ख़बर है कि यह कायनात कब से है और कब तक रहेगी? अभी हाल ही में आपने देखा होगा कि कामट जिसे (Commet)उर्दू में ज़रा बेतुके नाम से याद किया जाता है। 'दुमदार सितारा'।

यहाँ भी दिखाई दिया होगा। इस दुमदार सितारे की दुम की लम्बाई कितनी थी? आप सोच भी नहीं सकते हैं। इस मामूली से सितारे की जिसकी इस अज़ीम कायनात में कोई हैसियत ही नहीं है लेकिन इसके दुम की लम्बाई दो करोड़ मील थी तो अपने अल्लाह की अज़मत का हमको एहसास होना चाहिए है। ताकि उसकी अज़मत (Gratiness) के मुकाबले में हमको अपनी हिकारत और अपनी पस्ती का अन्दाज़ा हो सके। अल्लाह की यही अज़मत हम को उसके सामने अपना सर झुकाने को मजबूर कर देती है।

''मौला अली (अ०) का हिदायतनामा (Directive)और राजीव गांधी की ख़्वाहिश''

दुनियावी निज़ामे हुकूमत चाहे कितना ही तरक्की कर जाये लेकिन हज़रत अली (अ०) ने अपने कमाण्डर इन चीफ मालिके अश्तर (र०) को जो हिदायतनामा (Directive)लिखा था, उस तक नहीं पहुंच सकता।

मुझसे मेरे दोस्त मौलाना कौसर नियाजी मरहूम ने फरमाया था कि जब वो हिन्दुस्तान के सफर में राजीव गांधी के पास गये और हज़रत अली (अ०) का जिक्र निकला तो राजीव गांधी ने उन से ये कहा कि हज़रत अली (अ०) का वह हिदायतनामा (Directive)हमेशा मेरे सरहाने रहा करता है और राजीव गांधी के जुमले मौलाना कौसर नियाजी ने नक़्ल किये कि ''मेरे बस में अगर होता तो दुनिया के जितने भी मुल्क हैं उन सब के सरबराहों (Head of Estates)के पास यह Directive भेज दूँ और उनसे गुज़ारिश करूं कि हुकूमत करना है तो इस तरीके पर चलो।''

''ज़िक्रे हुसैन (अ०) आखिर कबतक होता रहेगा''

तकरीबन पन्दरह सौ सालों से ये ज़िक्रे हुसैन (अ०) हो रहा है तो किसी के जेहन मे ये सवाल आ सकता है कि आखिर ये ज़िक्र कब तक होता रहेगा? अगर आप को यह मालूम हो जाए कि हम ज़िक्रे हुसैन (अ०) क्यों कर रहे हैं

तो कब का सवाल ही खत्म हो जाएगा।

मैं अपने तमाम मुसलमान भाईयों से चाहे वो शिया भाई हों चाहे वो मेरे सुन्नी भाई हों, यह पूछना चाहता हूँ कि यह अज़ानों में 'अशहदो अन ला इलाहा इल्लललाह....कब तक होता रहेगा? भई कोई हद होती है। पन्द्रह सौ साल हो चुके हैं और दिन में पांच मरतबा आवाज़ बलन्द हो रही है "अशहदो अन ला इलाहा इलल्लाह"। आखिर यह कब तक होता रहेगा कि मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं है, अल्लाह के अलावा कोई खुदा नहीं है। कब तक होता रहेगा ये? तो सारे मुसलमान सुन्नी और शिया मिलकर जवाब देंगे कि भाई अश्हदो अन ला इलाहा इल्ललाह' कम से कम उस वक्त तक तो होता ही रहेगा जब तक बुत खानों में बुत (Idols) मौजूद हैं।

जब तक महन्त इनसानों के पेशानियों को बुतों के सामने झुकाते रहेंगे, उस वक़्त तक इन्सानों की ज़मीर को बेदार करने के लिए मजबूर हैं कि 'अशहदो अन ला इलाहा इलल्लाह' यानि सजदा करना है तो सिर्फ अल्लाह का करो, पेशानी झुकाना है तो सिर्फ अल्लाह के सामने झुकाओ। ग़ैरे खुदा के सामने पेशानी मत झुकाओ। यह सब माबूदाने बातिल (Fals Gods)हैं।

मेरे अज़ीज़ो जब तक मन्दिरों में बुत (Idols) रहेंगे हम "अशहदो अन ला इलाहा इलल्लाह" कहने के लिए मजबूर हैं। इसी तरह जब तक दरबारों में, PARLIAMENTSमें SENATES में कांग्रेस में BUT NOT INDIAN NATIONAL CONGRESS वो तो बहुत छोटी सी कांग्रेस है। एक और कांग्रेस (congress) है वाशिंगटन में है, जिसमें वह ज़ालिम और जाबिर बैठे हुये हैं जो कभी मुलूकियत (MONARCHY) की अबा पहेन लेते है और कभी जमहूरियत (Democracy) का लेबास पहन लेते हैं।

अगर मकसद सिर्फ एक होता है कि ग़रीबों को पनपने दो, कमज़ोरों को उठने ना दो, कमज़ोरों का खून चूसो। हर जगह जम कर बैठ जाओ। इंसान वही है जो हमारी गुलामी करे। जो हमारी गुलामी करने से इनकार कर दे वह इंसान नहीं है। तो जब तक ये अनासिर (Elements) मौजूद हैं, उस वक्त तक करबला का ज़िक्र ज़रूरी है। इसलिए कि करबला मज़लूम (Oppressed) की ताक़त का नाम है। करबला ऐटम (Atom)की ताक़त का नाम नहीं है, ईमान की ताक़त का नाम है।

□ □ □

(पेज नं0 13 का बकिया,..........)

का भी रख लिया था। मगर अब एक और अंदाज़ नज़र आया अब जो जौन ने आंखें खोलीं तो देखा आक़ा अपना रूखसारा रूखसारे से मिला रहे हैं। हुसैन (अ0) अपने रूखसारे को जौन के रूखसारे को मिलाते जाते हैं और दोआ करते जाते हैं। ऐ पालने वाले जौन को ख़याल था कि उसका रंग स्याह है। पालने वाले रंग को नूर से बदल दे जिस्म को खुशबू से मुअत्तर कर दे। हाँ आऐ ज़ैनुल आबेदीन (अ0) दफ़न करने के लिये।

बनी असद ने कहा मौला यूँ तो सभी की लाशों से नूर निकल रहा है सभी की लाशें मोअत्तर हैं मगर ये किस की लाश है कि नूर आसमान तक बलन्द होकर जा रहा है जिसकी खुशबू से जंगल महक रहा है, कहा ये गुलामे अबूज़र जौन की लाश है और ये मेरे बाबा की दोआ का असर है।

मैं कहता हूँ आक़ा जौन का सर ज़ानू पर रख लिया शायद इसीलिये फातेमा (अ0) जन्नत से आयी होंगीं ऐ बेटा, तेरा सर भी तो हो किसी के ज़ानू पर। कोई और नहीं मेरा ज़ानू हो और तेरा सर जुदा हो रहा हो।